Volume I, Issue XXIV
October To December 2018

2018-19

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.110 (2017)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

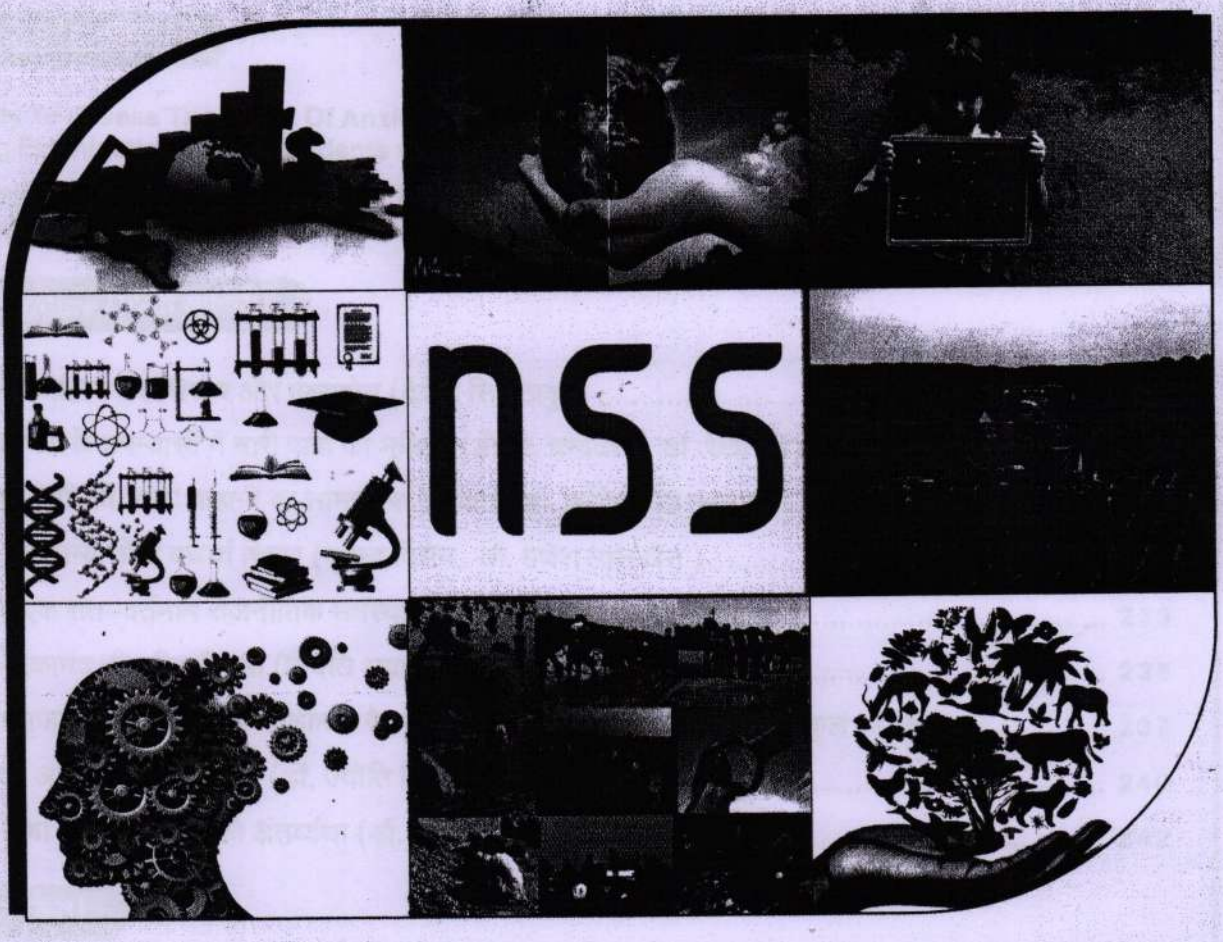

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

72. महिला सशक्तिकरण में संवैधानिक प्रावधानों का योगदान (आरती जोगे) 211
73. 'मी टू' अभियान एवं सोशल मीडिया (डॉ. निशा जैन) 213

(Geography / भूगोल)

74. Groundnut Productivity In Rajasthan - An Geographical Assessment (Vikas Singharia) 214
75. जोधपुर शहर में पाक विस्थापित शरणार्थियों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति (कंचन बानियाँ) 217

(Psychology / मनोविज्ञान)

76. A Study To Assess The Effect Of Anxiety In Relation To Emotional Intelligence 219
During Examination Anong Students Of Senior Secondary School In Jabalpur (Dr. Ratna Johari)
77. A Comparative Study Of Depression Between Male And Female In Adulthood 221
(Dr. Ratna Johari)

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

78. समकालीन महिला कहानीकार और मूल्यबोध (देवेन्द्र सिंह ठाकुर) 223
79. उषा देवी मित्रा के उपन्यासों में नारी पात्रों की भूमिका (डी.पी. चन्द्रवंशी, डॉ. रेखा दुबे) 225
80. डॉ. कला जोशी की 'चोर' कहानी का सामाजिक सरोकार (डॉ. मनीषा सिंह मरकाम) 228
81. प्रेमचन्द के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण (सुरेन्द्र बिसेन, डॉ. गणेश लाल जैन) 231
82. संशय की एक रात–वर्तमान राजनीतिक समस्याओं के संदर्भ में(डॉ. रंजना मिश्रा) 233
83. स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में नारी (नियति अग्रवाल) 235
84. अज्ञेय के सृजनात्मक साहित्य में स्वाधीनता के मूल्यों (प्रेम) के विविध आयाम (डॉ. अनुकूल सोलंकी) 237
85. वैश्वीकरण और हिन्दी का विकास (डॉ. ज्योति सिंह) 240
86. यामिनी कथा में पुत्तुल के मन की अंतर्व्यथा (डॉ. बिन्दु परस्ते) 242

(Sanskrit / संस्कृत)

87. कालिदास साहित्य में शाप–योजना (डॉ. कलपना पंचौली) 244
88. भवभूते: नाटकेषु अर्थवादतत्तवलोचनम् (डॉ. बालकृष्ण प्रजापति) 247

(Drawing / चित्रकला)

89. Examining The Environmental Sculpture In The Context Of Some Sculptures 249
By Sushen Ghosh (Binoy Paul)
90. भारतीय चित्रकला में छ: अंगों (षडंग) की भूमिका (डॉ. निशा गुप्ता) 252
91. राजा रवि वर्मा – और उनके आस्था भरे चित्र (डॉ. यतीन्द्र महोबे) 255
92. वर्तमान समय में छापाचित्रों के प्रति बढ़ता रुझान (अर्चना) 257

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) October To December 2018, Vol. I

राजा रवि वर्मा - और उनके आस्था भरे चित्र

डॉ. यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना - सन् 1875 ई. के बाद 'मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी शैली के कलाकारों का रूझान स्वाभाविकता एवं फोटोग्राफी नमूना चित्रों की ओर हो गया। राजा राम सिंह के समय जयपुर में भी फोटोग्राफी प्रयोगशाला खुल गई थी, फलस्वरूप जयपुरी चित्रकारों का रूझान भी छाया-प्रकाश से युक्त चित्रण की ओर हुआ। इसी के साथ-साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों द्वारा लाये गये रंग पद्धति पर यथार्थवादी चित्रकारों का ध्यान आकर्षित हुआ। वैसे यह क्रम अकबर के समय में ही प्रारम्भ हो गया था। जब ईसाई पादरी भारत में प्रवेश के समय अपने साथ यूरोपियन धर्म के कुछ चित्रकारों को भी लाये। यह प्रभाव शाहजहाँ काल के चित्रों पर भी देखने मिलता है।'

अंग्रेज़ो के पाँव इस देश में जम चुके थे। मुगल शैली एवं राजस्थानी शैली की मानवाकृतियों में जो निजी सौंदर्य तत्व शामिल था वह पूर्ण रूप से समाप्त हो चुका था, अर्थात भारतीय कला परम्परा समाप्ति की ओर मुड़ रही थी। ऐसे समय सन् 1848 में जन्मे राजा रवि वर्मा ने भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से जन-जन में आस्था और विश्वास की प्राण-प्रतिष्ठा की। उन्होंने अपने चित्रों की मानवाकृतियों में त्रि-आयामी प्रभाव की सुंदरता से मिथकीय चरित्रों को समकालीन जीवन का सहचर बना दिया। पराधीनता के भीतर मानवाकृतियों की ऐसी आस्थाजनित निर्मिति कोई दूसरा कलाकार नहीं कर सका। 'राजा रवि वर्मा ने अपनी मानवाकृतियों में यूरोपीय यर्थावादी शैली को इस तरीके से ढाला कि सम्पूर्ण कला जगत हतप्रभ रह गया। इसमें खासबात यह थी कि रवि वर्मा ने कला के किसी भी संस्थान में अकादमिक शिक्षा ग्रहण नहीं की।' अपनी मानवाकृतियों को भारत में पहली बार तैल रंगों से उभारने वाला कलाकार बन कला इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षर में अंकित कराया।

- 'पराधीनता' के अंदर राजा रवि वर्मा का जन्म एक यशस्वी चित्रकार के रूप में हुआ। बचपन से ही राजा रवि वर्मा को मानवाकृतियों के प्रति बड़ा लगाव था। वह स्वयं मानव आकृतियों का अभ्यास करते थे। 'जो इस घटना से लक्षित होता है - बाल्यावस्था में एक बार इनके मामा राज वर्मा भगवान विष्णु का चित्र बनाकर उसमें रंगभर रहे थे, बीच में उठकर वे किसी काम से बाहर गये, तब बालक रवि वर्मा ने औत्सुक्यवश उसे पूरा कर दिया यह देख उनके मामा अभिभूत हो गये। इनके मामा तजौर पद्धति पर चित्र बनाते थे। राजा रवि वर्मा पर इनका गहरा प्रभाव पड़ा।'

राजा रवि वर्मा ने अपनी कला के प्रति अटूट आस्था और कला अध्ययन में निरंतरता के फलस्वरूप सुहानी रंग-योजना में दक्षता हासिल की। वह अपनी कलाकृति में ऐसे रंगों का प्रयोग करते थे की दर्शक उस कलाकृति से सहृदय स्थापित कर लेते थे। 'वे अपने चित्रों की मानवाकृतियों के रूप-स्वरूप को तो सजाते ही थे, साथ ही उनके वस्त्रों की सलवटों तक का पूरा-पूरा ख्याल रखते थे। हल्का-पीला, भूरा, लाल, बैंगनी, हरा तथा काला उनके प्रिय रंग थे। वे रंगों की छाया व प्रकाश से चेहरे तथा भाव-मुद्राओं को अंकित करते थे। उनकी आकृतियों में रंग प्रमुख थे रेखायें नहीं।'

राजा रवि वर्मा के चित्रों में शकुंतला, वामन अवतार, महिला और दर्पण, माँ और शिशु, दुर्योधन-द्रोपदी, सरस्वती, सीता-हरण, दरिद्रता, श्रीकृष्ण-बलराम, सागर का गर्वदमन, वीणा के साथ युवती, हरिशचंद्र और तारामती आदि ऐसे अनेक विषय हैं जिनमें मानवाकृतियों की रंग-योजना बेजोड़ है। छाया-प्रकाश का यथा स्थान उचित प्रयोग किया है। जिससे मानवाकृतियाँ भावाभिव्यक्ति से भरी एवं सौंदर्य की मूरत दिखाई देती हैं। ये आकर्षक मानवाकृतियाँ दर्शक का मनमोह लेती हैं, और स्वत: अपनी ओर खींचती हैं (देखिए चित्र फलक - 28 एवं 29)।

राजा रवि वर्मा पूर्ण रूप से यथार्थवादी चित्रकार थे उनके चित्रों की मानवाकृतियाँ त्रि-आयामी प्रभाव देने वाली थी। उन मानव आकृतियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि वह जीवित अवस्था में बैठी, खड़ी या लेटी हुई हैं। इन मानवाकृतियों में त्रि-आयामी प्रभाव एवं जीवंतता की झलक दिखाने के लिए चित्रकार को मनुष्य के यथार्थ रूप से भली-भांति परिचित होना जरूरी होता है। यूरोपीय चित्रकला पद्धति में जब किसी वस्तु का चित्र बनाना होता है तो उस वस्तु को सामने रख लिया जाता है और यथार्थता के साथ उसका अनुकरण किया जाता है। इसी तरह मानव का चित्र बनाने में भी चाहे वह स्त्री हो या फिर पुरूष उसके अंग-प्रत्यंग से परिचित होना नितांत आवश्यक होता है। यूरोप में ऐसे अनेक कलाकार हुए जिन्होंने मनुष्य को मॉडल के रूप में बढ़ाकर अपनी मानवाकृतियों में त्रि-आयामी प्रभाव एवं हू-ब-हू चित्रण की झलक दिखाई। यूरोप में नग्न युवतियों के अनेक चित्र बनाए गए, जो मॉडल बैठाकर ही बनाये गये। 'राजा रवि वर्मा भारतीय थे, उनमें भारतीय भावना तथा मर्यादा फिर भी बांकी थी। उन्होंने देवी-देवताओं के चित्र बनाना नहीं छोड़ा। चित्रकला पद्धति में वे अवश्य यूरोप से प्रभावित थे, पर चित्र भारतीय बनाते थे। राजा रवि वर्मा को छोड़ भारत में एक भी ऐसा कलाकार नहीं हुआ जो यथार्थवादी मानवाकृति अंकित करने में यूरोप के कलाकार के टक्कर का हुआ हो। राजा रवि वर्मा को यथार्थवादी मानव आकृतियाँ अंकित करने के लिए वैश्याओं को मॉडल के रूप में बैठना पड़ा। प्रत्येक मानवाकृति बनाने के लिए मॉडल आवश्यक होता था। इनके विषय अधिकतर धार्मिक हुआ करते थे। जैसे-सीता, सावित्री, पार्वती इत्यादि। यथार्थ चित्रण करना उनकी शैली बन चुकी थी। अत: वैश्याओं को सीता जैसे वस्त्र तथा आभूषण पहनाकर उसी मुद्रा में बिठाकर विषय अनुरूप मानवाकृति तैयार करते थे। इसी प्रकार सावित्री, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी आदि देवियों के चित्र इन्होंने बनाए और भारतीय घरों को सुशोभित किया।'

* सहायक प्राध्यापक (चित्रकला) शासकीय महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत